व्याख्यान -43 स्नातक तृतीय खण्ड हिंदी प्रतिष्ठा, अष्टम पत्र - पाश्चात्य काव्यशास्त्र

2006 July

प्रो० हरे कृष्ण झा 'हरि', एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, जे० एन० कॉलेज, मधुबनी।

11 Tue

साहित्य में सम्प्रेषण की प्रक्रिया और आई० ए० रिचर्ड्स के विचार

पाश्चात्य समीक्षा के आधुनिक समीक्षकों में डॉ० आई० ए० रिचर्ड्स का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि रिचर्ड्स अर्थशास्त्री पहले थे, साहित्य समीक्षक बाद में। इन्होंने Principles of Literary Criticism, Science and poetry तथा Practical Criticism लिखकर सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक समीक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया।

आई० ए० रिचर्ड्स ने आलोचना सिद्धान्त के दो आधार स्वीकार किए — सम्प्रेषण एवं मूल्य। यहाँ सम्प्रेषण का विवेचन अभीष्ट है।

साहित्य में सम्प्रेषण की प्रक्रिया :

वस्तुतः साहित्य न तो विशुद्ध रूप में व्यक्तिनिष्ठ अभिव्यक्ति ही है, और न विशुद्ध रूप में किसी निश्चित सामाजिक लक्ष्य की पूर्ति का साधन मात्र ही। साहित्य का स्फुरण उस मनोवृत्ति से होता है जिसमें व्यष्टि केन्द्र में समष्टि परिधि समाहित रहती है और व्यष्टि केन्द्र समष्टि परिधि तक सम्प्रसारण की संभावनाओं से युक्त होता है। तात्पर्य यह कि साहित्य सर्जन के लिए अनुकूल मनःस्थिति में वैयक्तिक अनुभूति और सामाजिक उद्देश्य का सामंजस्य रहता है। साहित्य मूलतः साहित्यकार की उस वैयक्तिक अनुभूति का दूसरों तक सम्प्रेषण है जो वैयक्तिक होते हुए भी समग्र लोकहृदय को गहराई से स्पर्श करने में समर्थ है।

मनोरंजन, सामाजिक उपादेयता, आत्मप्रकाशन, नैतिकता आदि साहित्य के स्थायी मूल्य हैं, परन्तु सम्प्रेषणीयता साहित्य का वह अन्तवर्ती मूल्य है जो उक्त सब मूल्यों की अपेक्षा अधिक स्थायी है। जब साहित्यकार की निजी अनुभूति अभिव्यक्ति के विविध माध्यमों — अलंकार, बिम्ब-विधान, प्रतीक-योजना आदि से तदाकार होकर उस उदात्त स्तर पर पहुँच जाती है कि वह सभी सहृदय सामाजिकों के हृदय में वैसी ही संवेदना जाग्रत कर सके जैसी स्वयं साहित्यकार के मन में उस अनुभूति के उदय के समय जगी थी तभी साहित्य में सम्प्रेषणीयता का गुण उत्पन्न होता है। इसे ही भारतीय आचार्यों ने साधारणीकरण की संज्ञा से अभिहित किया है। सम्प्रेषणीयता में दो गुणों का समन्वय है—

(1) सम्प्रेष्य अनुभूति में गहनता और व्यापकता का वह गुण जो उसे व्यष्टि मन से समष्टि मन तक पहुँचाने में समर्थ हो।

June 2006

M	T	W	T	F	S	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

Notes

(iii) सामाजिकों के हृदय की ग्राहकता।

आई० ए० रिचर्ड्स का सम्प्रेषण सिद्धान्त :

'सम्प्रेषण सिद्धान्त' (Theory of Communication) रिचर्ड्स का एक प्रसिद्ध काव्य-सिद्धान्त है। उनका कहना है कि समीक्षा सिद्धान्त का विशेष सम्बन्ध कला कृति की समर्पण क्रिया और उसके मूल विवेचन से रहता है। समीक्षक को कला की समीक्षा के लिए वैज्ञानिक आधार और सम्प्रेषणीयता दोनों को आधार बनाना चाहिए। उनका मत है कि सम्प्रेषणीयता को रहस्यात्मक व्यापार नहीं, वरन् सम्प्रेषणीयता में कुछ विशेष परिस्थितियों में विभिन्न मतों को एक जैसी अनुभूति मिलती है— "All that occurs is that under certain condition seprate minds have closely similar experience." उनका कहना है कि जब किसी वातावरण विशेष में एक व्यक्ति उस व्यक्ति की क्रिया के प्रभाव से ऐसी अनुभूति प्राप्त करता है, जो पहले व्यक्ति की अनुभूति के समान होती है। भाव यह है कि कलाकार ने जो चाहा है, वह उसे दूसरों तक उसी रूप में पहुँचा सका है, अथवा नहीं। इसी प्रक्रिया को सम्प्रेषणीयता कहते हैं। दूसरा प्रश्न उठता है कि कलाकार ने जो कहना चाहा है, उसका मूल्य क्या है। कला इस

सम्प्रेषणीयता का सर्वोत्कृष्ट साधन होती है।

रिचर्ड्स ने कवि या कलाकार की वर्णन या चित्रण क्षमता तथा श्रोता या पाठक या द्रष्टा के ग्रहण करने की शक्ति को ही प्रेषणीयता का मूलाधार माना है। साथ ही वह विषय का विस्तृत एवं व्यापक परिचय, जीवन की परिस्थितियों एवं अनुभूतियों आदि की समानता को भी प्रेषणीयता का सहायक माना है। कला के लिए प्रेषणीयता अत्यन्त आवश्यक है, परन्तु कलाकार उसे उत्पन्न करने के लिए विशेष प्रयत्न नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से कला में कृत्रिमता आ जाने का भय रहता है। यदि कलाकार पूर्ण तन्मय होकर भी कलाकृति का निर्माण करता है, तो प्रेषणीयता उसमें स्वतः आ जाती है।

उन्होंने सम्प्रेषण के लिए अनुभूति को स्वीकार किया है। बिना अनुभूति के भाव सम्प्रेषण संभव नहीं है। वस्तुतः भावों को सम्प्रेषित करना है, इसलिए भी अनुभूति आवश्यक है— An experience has to be formed, No doubt it is communication but it takes the form it does largely because it may have to be communications. इस प्रकार स्पष्ट है कि कला या साहित्य हमारे उदात्त भावों का उदात्त रूप है।

Notes

August 2006

M	T	W	T	F	S	S
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23				27
28	29	30				

15 Sat

काव्य में सम्प्रेषणीयता का माध्यम होती है — भाषा। भाषा अर्थ को सूचित करती है और इस अर्थ के चार भेद होते हैं — वाच्यार्थ (Sense), भाव (feeling), वक्ता की वाचिक चेष्टा (Tone) तथा अभिप्राय (Intentions)। विषय एवं परिस्थिति भेद से अर्थ के चारों भेद भिन्न-भिन्न अनुपातों में कार्य करते हैं। अर्थ का भाव से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। रिचर्ड्स ने अर्थ और भाव के इस सम्बन्ध के तीन रूप माने हैं —

(i) जहाँ अर्थ ही भाव का बोधक होता है।
(ii) जहाँ अर्थ ही भाव की अनुभूति का सूचक होता है
(iii) जहाँ प्रसंग-विशेष के कारण ही अर्थ विभिन्न भावों के सूचक बन जाता है।

काव्यास्वादन की प्रक्रिया को रिचर्ड्स ने छह अवस्थाओं में विभाजित किया है —

(i) मुद्रित शब्दों का नेत्रों द्वारा ग्रहण
(ii) स्वतंत्र बिम्बों द्वारा ग्रहण

16 Sun

(iii) नेत्रों द्वारा प्राप्त संवेदनाओं से सम्बन्धित बिम्ब ग्रहण
(iv) विभिन्न वस्तुओं का बोध
(v) भावानुभूति
(vi) दृष्टिकोण से सामंजस्य।

इनके द्वारा वह स्थायी भाव की उद्दीप्ति को ही काव्य का लक्ष्य मानता है।

=

June 2006

T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4
6	7	8	9	10	11
13	14	15	16	17	18
20	21	22	23	24	25
27	28	29	30		

Notes